Contribution of Sucheta Kripalani in Indian Independence

"भारतीय स्वतंत्रता में सुचेता कृपलानी का योगदान"

Tanu Shri Dwivedi *, Dr. Ramesh Chandra Mishra **

*Research student, Department of Political Science, Nehru Gram Bharati University Jamunipur, Kotwa, Prayagraj, U.P.

**Associate Professor, Department of Political Science, Nehru Gram Bharati University

Jamunipur, Kotwa, Prayagraj, Uttar Pradesh.

सार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान को शामिल किए बिना स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास ही अधूरा हो जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सुचेता कृपलानी द्वारा दिये गये बलिदान का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी बहादुरी, निःस्वार्थ सेवा एवं बलिदान अतुलनीय है। हम लोगों में से बहुत से लोग इस तथ्य से अनभिज्ञ है कि सुचेता कृपलानी ने पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ी। महिलाओं ने अपने आत्मिक बल तथा पूरे साहस से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। स्वतंत्रता में भाग लेने के लिए सुचेता कृपलानी ने बहुत सी प्राचीन परम्पराओं को तोड़ा तथा अपनी परम्परागत घरेलू जिम्मेदारियों को भी छोड़ा। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन में उनका योगदान सराहनीय एवं वन्दनीय है। पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए यह बहुत आसान नहीं था कि वे एक बहादुर की तरह सियासत की लड़ाई लड़ें। लेकिन सुचेता कृपलानी ने लोगों के इस मिथ को तोड़ दिया कि महिलाएं केवल घरेलू कार्य करने के लिए होती हैं। अधिकांश महिलाओं ने आन्दोलन में अपनी प्राणों की आहुति भी दी, उनमें से एक सुचेता कृपलानी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है | ऐसी ही स्वतंत्रता के आन्दोलन में सम्मिलित सुचेता कृपलानी को यह शोध पत्र समर्पित है।

मुख्यशब्द: *राजनितिक,सामाजिक,स्वतंत्रता आदि*

प्रस्तावना

भारतीय समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। महिलाएं दबी कुचली थी, इसका मुख्य कारण था पुरूष प्रधान समाज का होना। समाज में यह मान्यता प्रचलित थी कि महिलाओं का प्रमुख दायित्व घरेलू काम काज सम्भालना है इसलिए उन्हें अन्य कियायों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जा सकती। यहां तक कि पुरूषों के बीच उनको अपने विचार रखने की भी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। पुरूषों के फैसले महिलाओं पर थोप दिए जाते थे। जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, विधवाओं को पुर्नविवाह करने की अनुमति न देना, लड़कियों की भ्रूण हत्या आदि बहुत आम बात थी। ईस्ट इण्डिया के शासन के दौरान कई समाज सुधारक राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर तथा ज्योतिबा फूले इत्यादि ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए बहुत संघर्ष किया, इस काल में बहुत सी महिलाएं मार्सल आर्ट में पारंगत की गयी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सन् 1817 में महिलाओं का प्रवेश हो गया रानी लक्ष्मीबाई, भीमाबाई होल्कर, मैडम भीकाजी कामा आदि ने अंग्रेजों की विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलनकारियों में महिलाओं की एक लम्बी श्रृंखला है।

शोध उददेश्य

1. सामान्य रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन के बारे में अध्ययन करना।
2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में सुचेता कृपलानी के योगदान का वर्णन करना।
3. सुचेता कृपलानी के आर्थिक तथा समाजिक स्थिति का वर्णन करना।
4. सुचेता कृपलानी के बलिदान और कार्यों को जानना।

सुचेता कृपलानी के जीवन परिचय

सुचेता कृपलानी मूल नाम: सुचेता मजूमदार का जन्म 25 जून,1908 एवं मृत्यु 1 दिसम्बर, 1974 में हुआ था |एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनीतिज्ञ थीं। ये उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री बनीं और भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री थीं। वे प्रसिद्ध गांधीवादी नेता आचार्य कृपलानी की पत्नी थीं।

सुचेता कृपलानी के शिक्षा एवं पारिवारिक परिचय

सुचेता कृपलानी का जन्म हरियाणा के अंबाला शहर में सम्पन्न बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता सरकारी चिकित्सक थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कई स्कूलों में पूरी हुई

क्योंकि हर दो-तीन वर्ष में पिता का तबादला होता रहता था। आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें दिल्ली भेज दिया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से उन्होंने इतिहास विषय में स्नातक की डिग्री हासिल की। कॉलेज से निकलने के बाद, 21 वर्ष की उम्र में ही ये स्वतंत्रता संग्राम में कूदना चाहती थीं पर दुर्भाग्यवश वह ऐसा कर नहीं पायीं क्योंकि 1929 में उनके पिता और बहन की मृत्यु हो गयी और परिवार को संभालने की जिम्मदारी सुचेता के कंधो पर आ गयी। इसके बाद, वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में संवैधानिक इतिहास की व्याख्याता बन गईं।

सन 1936 में अठाइस साल की उम्र में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुख्य नेता जेबी कृपलानी से विवाह किया। सुचेता के इस कदम का उनके घर वालों के साथ महात्मा गांधी ने भी विरोध किया था। जेबी कृपलानी सिन्धी थे और उम्र में सुचेता कृपलानी से बीस साल बड़े थे। इसके अलावा गाँधीजी को डर था कि इस विवाह के कारण आचार्य जो उनके "दाहिने हाथ" थे, कहीं स्वतंत्रता संग्राम से पीछे न हट जाँय।

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस

आचार्य कृपलानी का साथ पाकर सुचेता पूरी तरह से राजनीति में कूद पड़ीं। 1940 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की महिला शाखा – 'अखिल भारतीय महिला काँग्रेस' की स्थापना की। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय होने के कारण उन्हें एक साल के लिए जेल जाना पड़ा। १९४६ में वह संविधान सभा की सदस्य चुनी गई। 1949 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रतिनिधि के रूप में चुना गया था।

भारत के स्वतंत्र होने के बाद वह भारतीय राजनीति में सक्रिय हो गयीं। जब उनके पति व्यक्तिगत व राजनीतिक मतभेदों के कारण जवाहरलाल नेहरू से अलग हो गए और अपनी खुद की पार्टी किसान मजदूर प्रजा पार्टी बनाई तब सुचेता भी इनके साथ हो लीं। 1952 में सुचेता किसान मजदूर पार्टी की ओर से न्यू दिल्ली से चुनाव लड़ी और जीतीं भी। पर शीघ्र ही राजनैतिक मतभेदों के कारण वह काँग्रेस में लौट आयीं। 1957 में काँग्रेस के टिकिट पर इसी सीट से वह दुबारा चुनाव जीतीं और राज्यमंत्री बनायीं गयीं। 1948 से 1960 तक वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की महासचिव थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में सुचेता कृपलानी के योगदान का वर्णन

1962 में सुचेता कृपलानी ने उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव लड़ा। वे कानपुर निर्वाचन क्षेत्र से चुनी गयीं और उन्हें श्रम, सामुदायिक विकास और उद्योग विभाग का कैबिनेट मंत्री बनाया गया। 1963 ई में उन्हें उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बना दिया गया। 1963 से 1967 तक वह उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं। 1967 में उन्होंने उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले से चौथी बार लोकसभा चुनाव लड़ कर जीत हासिल की।

सन 1971 में उन्होने राजनीति से संन्यास ले लिया। राजनीति से सन्यास लेने के बाद वे अपने पति के साथ दिल्ली में बस गयीं। निःसन्तान होने के कारण उन्होंने अपना सारा धन और संसाधन लोक कल्याण समिति को दान कर दिया। इसी समय, उन्होंने अपनी आत्मकथा 'एन अनफिनिश्ड ऑटोबायोग्राफी' लिखनी शुरू की, जो तीन भागों में में प्रकाशित हुई। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य गिरता गया और 1 दिसम्बर 1974 को हृदय गति रूक जाने से उनका निधन हो गया। सुचेता कृपलानी भारत के किसी प्रदेश की पहली महिला मुख्य मंत्री थीं। ये बंटवारे की त्रासदी में महात्मा गांधी के बेहद करीब रहीं। वे उन चंद महिलाओं में शामिल हैं, जिन्होंने बापू के करीब रहकर देश की आजादी की नींव रखी। वह नोवाखली यात्रा में बापू के साथ थीं। वे दिल की कोमल तो थीं, लेकिन प्रशासनिक फैसले लेते समय वह दिल की नहीं, दिमाग की सुनती थीं। उनके मुख्यमंत्रित्व काल में राज्य के कर्मचारियों ने लगातार 62 दिनों तक हड़ताल जारी रखी, लेकिन वह कर्मचारी नेताओं से सुलह को तभी तैयार हुईं, जब उनके रुख में नरमी आई।

भारतीय राजनितिक योगदान

- वर्ष 1938 में स्वतन्त्रता संग्राम में अग्रणीय कार्य किया।
- वर्ष 1940 और 1944 में कांग्रेस आन्दोलनों में गिरफ्तार।
- 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में गुप्त रूप से दीर्घ काल तक कार्य किया।
- वर्ष 1946 में नोआखाली (पूर्व बंगाल) के दंगों में पीड़ितों की सहायता तथा बचाव का कार्य किया।
- वर्ष 1948 में प्रथम बार उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्या बनी।

- वर्ष 1950-52 में प्रोवीजनल लोक सभा की सदस्या।
- वर्ष 1951 से 1956 तक किसान मजदूर प्रजा पार्टी तथा प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में कार्य किया।
- वर्ष 1952, 1957 एवं 1967 में लोक सभा की सदस्या निर्वाचित।
- दिनांक 12 दिसम्बर,1960 से दिनांक 01 अक्टूबर, 1963 तक श्री चन्द्र भानु गुप्त सरकार में मंत्री।
- दिनांक 4 मई,1961 को उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की सदस्या।
- वर्ष 1962 में उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्या।
- दिनांक 2 अक्टूबर,1963 से 13 मार्च, 1967 तक उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं।
- 1967 में गोंडा से लोकसभा चुनाव जीता। (चौथी बार)
- 1971 में राजनीति से संन्यास ले लिया।
- कांगेस के सहायता विभाग की सेक्रेटरी की हैसियत से भारत के विभाजन के समय शरणार्थियों के पुनर्वासन का कार्य किया।
- ट्रेड यूनियनों की अध्यक्षा तथा इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस की दिल्ली शाखा की सभापति।
- कस्तूरबा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट की संगठन सचिव और गांधी स्मारक निधि की उपसभापति।
- दिल्ली विश्वविद्यालय की सीनेट तथा मीरेण्डा हाउस व लेडी श्रीराम कालेज की गवर्निंग कौंसिलों की सदस्या।
- नव हिन्द एजूकेशन सोसाइटी की अध्यक्षा।

विदेशी यात्रा

- वर्ष 1949 में संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय प्रतिनिधि मंडल की सदस्या होकर अमेरिका गयीं।
- वर्ष 1954 तथा 1957 में संसदीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व कर तुर्किस्तान गयीं।
- बैंकाक में संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में आयोजित सभा में भाग लिया ।

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अग्रणी सेनानी सुचेता कृपलानी का आज यहां दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया, वह 67 वर्ष की थीं। उनके पति, आचार्य कृपलानी भी एक प्रमुख राजनीतिज्ञ हैं, और दोनों मोहनदास के. गांधी की शांतिवादी शिक्षाओं के शिष्य थे। वह 1963 से 1967 तक उत्तर प्रदेश राज्य की मुख्यमंत्री रहीं। श्रीमती कृपलानी, जिनकी शिक्षा लाहौर में हुई जो अब पाकिस्तान और नई दिल्ली में है, 1931 से 1939 तक बनारस में हिंदू विश्वविद्यालय में व्याख्याता थीं। ब्रिटेन से भारतीय स्वतंत्रता के लिए कांग्रेस आंदोलन में सक्रिय होने के कारण, उन्हें चालीस के दशक में दो बार जेल में डाल दिया गया था। . 1946 में, वह भारत की संविधान सभा और संसद की सदस्य बनीं, और 1949 में वह संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्रतिनिधि थीं ।

सन्दर्भ

- S K Sharma (2004), Eminent Indian Freedom Fighters, Anmol Publications PVT. LTD., पृ॰ 560, आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9788126118908
- "संग्रहीत प्रति". मूल से 21 जुलाई 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 जुलाई 2009.
- "संग्रहीत प्रति". मूल से 2 मई 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 जुलाई 2009
- https://www.jetir.org/papers/JETIR2203325.pdf
- https://www.nytimes.com/1974/12/02/archives/sucheta-kripalani-indian-aide-and-independence-fighter-dies-an.html